241 240 236 260

Impact Factor - 6.261 ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February-2019 Special Issue - 165 (B)

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane-Nile, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

This Journal is indexed in :
- University Grants Commission (UGC)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

242 241 2.61 237

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 165 (B)- Multidisciplinary Issue
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
February-2019

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

Impact Factor - 6.261 ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February -2019 Special Issue -165 (B)

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane-Nile, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 800/-

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 165 (B)- Multidisciplinary Issue
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
February-2019

INDEX

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
1	निराला और मुक्तिबोध का हिंदी काव्य पर प्रभाव	डॉ. शोभा ढाणकीकर	07
2	सामाजिक संघर्ष का दस्तावेज : पाँव तले की दूब	डॉ. एस. एल. यशवंतकर	11
3	सियारामशरण गुप्त के काव्य में पौराणिक व मिथकीय संदर्भ	कंचन शर्मा	14
4	परशुराम शुक्ल की बाल कविताओं में नैतिक मूल्य	संजय कुमार	20
5	'सपनों की होम डिलिवरी' का आधुनिक संदर्भ	डॉ. परविंदर कौर महाजन	24
6	शाश्वत सत्य के उद्घोषक	डॉ. शैलेन्द्र पाल सिंह	28
7	'मै अपराधी हूँ में परित्यक्ता नारी	डॉ. संजय ढोंढरे	40
8	अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध की सीता'	डॉ. मुकेश कुमार	43
9	शैलेश मटियानी के उपन्यासों में मुंबई महानगरीय समस्याएँ	डॉ. रमेश कुरे	48
10	साहित्य और सिनेमा का अंतःसंबंध	डॉ. सुचिता गायकवाड	53
[redacted]	[redacted]	[redacted]	[redacted]
12	महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में अभिव्यक्त राजनीतिक चेतना	डॉ. राजेश भामरे	61
13	केदारनाथ सिंह की काव्य चेतना	डॉ. अनंत केदारे	64
14	अन्न सुरक्षा कायदा : एक ऐतिहासिक परामर्श	प्रा. ओंकार केने	70
15	नरेश मेहता के मुक्तक काव्य में प्रकृति चित्रण	प्रा. शांताराम डफळ	76
16	'तत्वमसि' : महानगरीय स्त्री – की कथा	डॉ.सन्मुख मुच्छटे	82
17	संजीव के उपन्यासों में चित्रित निम्नवर्गीय शोषण	प्रा.मच्छिंद्र कुंभार	85
18	प्राथमिक विद्यालयों में सी.सी.ई. के तहत व्यक्तिगत एवं सामाजिक गुण सम्बन्धी गतिविधियों का अध्ययन	अशोक कुमार नेगी एवं डॉ.ज्योत्स्ना खरे	90
19	मणिकर्णिका : एक संघर्ष की गाथा	डॉ. सुलभा शेंडगे	97
20	भारतातील शेती उत्पादकता : सद्यस्थिती, समस्या व उपाययोजना	डॉ. हनुमंत शिंदे	99
21	उत्तर प्रदेश आणि महाराष्ट्रातील दलित जातसमुहांचे राजकारण	श्री.राजेंद्र आगवाने	111
22	'कुळंवीण' : शेतकरणीच्या श्रमाचे चित्रण	डॉ. आनंद वारके	116
23	आधुनिक मराठी साहित्यातील सामाजिकतेचे पहिले उद्गाते : म.जोतीराव फुले	दत्तात्रय वेलजाळी	120
24	आर्थिक योजनेतून महिला सशक्तीकरणाकडे	प्रा.मिलिंद पाडेवर	124
25	स्त्रीवादी साहित्याची समाज परिवर्तनातील उपयोगिता	प्रा.विष्णुपंत इंगवले	128
26	ग्राहकांच्या समस्या व त्या सोडविण्यासाठी ग्राहक संरक्षण कायदा १९८६ मधील यंत्रणा	प्रा.पी.जी.मगर	132
27	रावेर तालुक्यातील उच्च माध्यमिक विद्यालयातील विद्यार्थ्यांचा भावनिक बुद्धिमत्तेचा अभ्यास	डॉ.प्रतिभा सूर्यवंशी	137
28	फेसाटीसमाजशास्त्रीय समीक्षा (नवनाथ गोरे)	भारती सोनवणे-निळे	141
29	नरेंद्राचे रुक्मिणीस्वयंवर आणि मराठी भाषाभिमान	डॉ.भूषण बंड	146
30	भारतीय कृषी आणि वित्तपुरवठा	परमेश्वर भुस्से	149
31	वायू प्रदूषण आणि मानवी जीवन : एक अभ्यास	डॉ.रामदास मुकटे	152
32	जालना जिल्ह्यातील धार्मिक स्थळांचा भौगोलिक अभ्यास	डॉ.ए.आय.खान व जिजा लोंढे	157

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI
PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 165 (B)- Multidisciplinary Issue
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
February-2019

'आग-पानी आकाश' उपन्यास में दलित चेतना

डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ
हिन्दी विभागाध्यक्ष
शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली
जिला हिंगोली-431513
भ्रमनध्वनि- 9850203878

दलित साहित्य स्वतंत्रता, बंधुता, न्याय, समानता के मूल्य लेकर मानवीय उत्क्रांति के लिए प्रतिबद्ध है। दलित साहित्य में केवल दलित ही नहीं बल्की समग्र मानवीय जीवन की पक्षधरता के सवाल उठाए गए। साहित्य और समाज के निकटवर्ती सम्बन्ध का मूल आधार व्यक्ति है । रचनाकार अपने समय का प्रतिनिधि होता है। उसको जैसी मानसिक खाद मिलती है, वैसी ही उसकी कृति होती है। आज वहीं साहित्य महत्वपुर्ण है जो वर्तमान तथा यथार्थ जीवन से जुडा है। वह वर्तमान जीवन की समस्याओं पर दृष्टिपात ही नहीं करता तो उन समस्याओं से उपर उठने का उपदेश भी प्रदान करता है।

चेतना का अर्थ है जागना, होश में आना, साझीदारी से काम लेना। समाज में चल रहीं अमानवियता के प्रति आवाज उठाना, विद्रोह करना, उसको अपने मानवोचित अधिकार एवं स्थिरता के लिए प्रेरित करना। साहित्य समाज का दर्पन है। साहित्य में कला को हमने सत्यम, शिवम् माना है, किन्तु हम इस सुत्र को तभी चरितार्थ कर पायेंगें जिसके साथ अन्याय हो रहा है, जिसके साथ अमानवियता भरा व्यवहार हो रहा है। जब तक समता का संसार स्थापित नहीं होगा तब तक साहित्य में सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् की भावना करना मात्र कल्पना है।

एक साहित्यकार अपने विचारों को लेखनी के व्दारा साहित्य के माध्यम से समाज में दूर तक पहुंचाता है। एक लेखक अपनी लेखनी जो उसका सबसे बडा हथीयार है के व्दारा ही समाज के सोए पडे या दबे कुचले समाज में परिवर्तन का संचार करता है। चाहे वह वर्ण व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष कर रहा हो और चाहे देश की आजादी के दौरान अंग्रेजों के विरुध्द का संघर्ष। किसी भी देश या समाज के परिवर्तन में लेखक की भूमिका अहम रहीं है। आजादी मिलने के सत्तर वर्षो के बाद भी समाज में जातिगत अन्तर समाप्त नहीं होता। अनेक रचनाकारों ने जातिगत अस्पृश्यता को हटाने के लिए समाज का वास्तविक चित्रण अपनी रचनाओं में किया है साथ ही अनेक दलित साहित्यकारों ने दलित चेतना को जगाने का काम किया है।

प्रस्तुत उपन्यास रामधारी सिंह दिवाकर द्वारा लिखा है। 'आग-पानी आकाश' उपन्यास में उच्चवर्ग के पात्रों में रणविजय बाबू, रत्नेश्वर आदि उच्चवर्ग के पात्र है। निम्नवर्ग के पात्रों में सौखीलाल, कजरी, झोली, नन्दू, बबलू रिक्शेवाला, उलटदास, किसुमियाँ, बिपियाँ, सीताराम आदि है।

दलित समाज उपेक्षित है, चाहे वह गाँव में हो या शहर में। इस उपन्यास में दलितों की स्थिति का वर्णन किया है। उपन्यास में सौखीलाल अपने बाल-बच्चों और घरवाली के साथ भाई के घर में ही रहता है। वह पुश्तैनी मजदूर है। एक दिन उनकें घर बबलू रिक्शेवाला आता है। सौखीलाल की पत्नी बबलू रिक्शेवाले को खाना देती है जैसे -"सौखीलाल की घरवाली अन्दर से कटोरे में खीर लेकर आई और रिक्शेवाले की थाली में कटोरे को इस तरह उलटा जैसे छूत की बीमारी से ग्रस्त किसी भिखारी को कुछ खाने के लिए दे रही है ।"[1] रचनाकार ने दलितों की दयनीय स्थितियों में आनेवाले पात्रों के माध्यम से भी दलित चेतना प्रगट

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 165 (B)- Multidisciplinary Issue
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
February-2019

की है। उनके साथ जो व्यवहार किया जाता है इनमें आज के संदर्भ में दलितों के प्रति व्यवहार का श्रेष्ठ उदाहरण है। गॉवो में आज भी इस तरह का व्यवहार होता है। यहीं दलितों की वास्तविक स्थिति है।

प्रस्तुत उपन्यास में नन्दु नाम का पात्र है। जो जमींदारी प्रथा से जुझ रहा है। रणविजय बाबू बहुत बडे जमीदार थें। वे नन्दु और उनकी मॉ पर अत्याचार करते रहते है। रणविजय बाबु गॉव के लोगों की जमीन को अपने यहॉ गिरवी रखता है और उनके बदले गॉववालों को पैसा देता है। जब पैसा वापस नहीं मिलता है तो श्रमिकों की जमीन अपने नाम पन कर लेता है। रणविजय के साथ रत्नेश्वर जैसे जमीदार भी जुडे हुए है - एक जगह रणविजय कहता है -"यह देखो, झोलिया आ रहा है। साले को छटपणी लगी हुई है कि कब हो जाय जमीन की रजिस्टभी। महदामा हो गया है न कितना लिहाज करता है। साबिक का आदमी है न। देखा है इसने जुग-जमाना । डयाढी की शान देखी है। देखों मालिक के सामने मूढे पर नही बैठ रहा है। इसी को कहते है मरजाद।"[२] ब्याज पर पैसे लेने के कारण कई लोग वक्त पर पैसे वापस नहीं दे पाते। पैसे वक्त पर न देने के कारण रणविजय जमीन हडपलेता है। जो वक्त पर पैसे देते है उसको भी जमीन जल्द वापस नहीं दी जाती।

मरकसा गॉव नैसर्गिक रुप से लावे की राख पर बसा है। पहले इस गॉव का नाम मार्क्सवादी गॉव था। गॉव में जमीनदारों का अत्याचार से चरन महतों गॉव छोडकर चल जाता है और जमीदारों से कहता है - "कौन रहेगा ऐसे गॉव में जो आदमी न समझें जहॉ के लोगों की जिदंगी एक आम जिदंगी है। इनकों कभी भी छिन लिया जाता है।"[३] मरकसवा गॉव ऊपर-ऊपर तो मरियल गॉव-जैसा ही दिखता है लेकिन मरकसवा गॉव मे जी रहें लोंगों की वास्तविक स्थिति कुछ ओर है। दूसरे गॉवों से उसे अलग इसलिए करता है कि अलाव की राख के नीचे बची हुई है आग। ऊपर से लगता है राख ही राख खोदने पर पता चलता है कि नीचे आग जिन्दा है।

दलितों कें बढते वर्चस्व ने सवर्ण-सत्ता को छिन्न-भिन्न कर दिया है। बडका इस गॉव के पिछले पचास साल के इतिहास को देखे तो आजादी के ठीक बाद के समय से पिछडी जात का एक भी नेता कही नहीं था। दलित नेता तुलमोहन राम एम.पी. बनते थे जरूर, मगर उनका सुरक्षित क्षेत्र था। तुलमोहन राम की अपनी अहमियत क्या थी जो कह दे बडका टोले के जमीदांर बाबू सुरवंश शर्मा एम.एल.ए. या दूसरे सभी बडे पदों पर सिर्फ ब्राम्हण और राजपूत ही दिखई देते है। भूमिहार तो बस खोजने पर मिलते थे। पिछडे वर्ग के कुछ पिछलग्गु नेता थे। लेकिन बडका गॉव इसमें आपवाद था। इस गॉव में बारह-चौदाह साल से धीरे-धीरे सवर्ण वर्ग गायब होता चला गया।

उपन्यास में दलित नारी शोषण का वर्णन किया गया है। उपन्यास में कजरी, भाई, लीलावती, राजपुताही, रूपमति आदि स्त्रियॉं ऐसी है जो किसी न किसी बात से शोषित रहीं है। उपन्यास में कजरी विधायक से पीडित है। उसका भाई मरकसवा गॉव का एक प्रसंग कजरी को बताता है। बामण चन्द्रदेव झा की बेटी दलित लडके से प्यार करती है। निम्न जाती का लडका होने के कारण घरवाले विरोध करते है। अंत मे वह आत्महत्या कर लेती है। भाई कहता है-"गले में फॅसरी लगाकर न मरी थी चन्द्रदेव झा की बेटी। पढानेवाले मास्टर से फॅसी थी। गर्भ रह गया। लाख कहा लोंगो ने कि मास्टर छोटी जात का है तो क्या, सरकारी नौकरी में है, शादी करा दीजिए। लेकिन बामण जात काहे मानते दूसरे का कहा ।"[४]

उपन्यास में कजरी स्त्री पात्र है। कजरी की मॉ मर गई है और बाप शराबी है। इस भाग का विधायक कजरी पर नजरे थामे हुआ है। एक दिन कजरी का बाप ताडीखाने में था। तब वह कजरी के घर

SHIVAJI COLLEGE
PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 165 (B)- Multidisciplinary Issue
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
February-2019

की ओर जाता है। आसपास के घरों में कोई मर्द दिखाई नहीं देता। इस मौके का वह फायदा उठाता है। विधायक कजरी पर बलात्कार करता है। सुबह होते सारे गॉव में ये खबर फैल जाती है। मरकसवा गॉव का पत्रकार बी.पी. ने पटना अखबार में इसका पर्दाफाश किया। सब तरफ शोर मचता है तब बिगडे वातावरण को शांत करने के लिए मुआवजे की घोषणा कर दी जाती है। कजरी को मुआवजे के नाम पर कुछ नहीं मिलता तब कजरी कहती है -"मुख्यमंत्री ने घोषणा तो कर दी। मुआवजा के लिए कई बार पटना गयी। डायमंड पैरवी करने से इनकार कर दिया। तीन-चार दिनों तक लगातार कोशिश के बाद मुख्यमंत्री से मुलाकात हो पायी। मुख्यमंत्री ने जिलाधिकारी से मिलने को कहा। जिलाधिकारी ने कहा उनको कोई सूचना नहीं है। इस सम्बन्ध में न मुआवजा मिला और न घर।"[५] दलितों को केवल आस्वासन दिया जाता है। आस्वासन के अलावा उसे कुछ नहीं मिलता। कई कार्यालयों में चक्कर काटने को लगवाया जाता है, लेकिन अन्त में हासिल कुछ भी नहीं होता।

रूपमति भी जिस टेलरिंग हाउस में काम करती है। उनका मालिक भी रूपमति से बार-बार अश्लिल बर्ताव करता है। अन्त में रूपमति को टेलरिंग हाउस छोडना पडता है। रूपमति कजरी से कहती है- भारी बदमाश है, ई मालिक, ताडीखाने के पियक्कडों के बीच चलती है। औरत के लिए यह गन्दी गाली है रे कजरी। इस प्रकार उपन्यास में दलित नारी का शोषण एक- या दूसरी तरह से होता है। जिनकों दिवाकरजी ने अपनी लेखनी के माध्यम से उजागर किया है।

आज के समय में स्त्री व्यक्तित्व को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक अधिकारों के लोकतांत्रिक पुनःस्थापना की जरूरत है। सामाजिक व्यवस्था को देखे बिना नियम बताने से सत्तात्मक शक्तियों का निवारण नहीं हो पायेगा। मानवहित की महत्ता को समझती हुई, संजोती हुई आज की स्त्री इस समाज के सभी स्तरों पर विद्यमान असमानताओं पर बोलती है। स्त्रियों में विशेषकर दलित जाति की स्त्रियों को जो अबला स्वरूप था, आज वही घर की चौखट से लेकर पूरे समाज तक उत्पीडन की शिकार हो रहीं है। पुरूष प्रधान समाज में जिसमें महिला अपना जीवनचक्र पूरा करती है। यही पुरूष प्रधान समाज आज इसे उन्नति की राह पर जाने से रोक रहा है। स्त्रीयों का शोषण होने के कारण सदियों की तरह आज भी असहाय बना रहा है। किन्तु विभिन्न प्रयासों के व्दारा आज प्रगतिशील युग में स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन का बिगुल बज उठा है वह उनके उत्पीडन की समाप्ति की ओर ले जानेवाले पथ को प्रकाशमय करेगा। स्त्री संघर्श के स्वरों तथा स्त्री की मुक्ति की कामना को भी पहचाना जा सकता है। आज की स्त्रियाँ विद्रोही, जुझारू, जागरूक, आत्मसम्मान से युक्त बुद्धिजीवीं स्त्रियाँ है।

इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में समकालीन समाज में दलित स्त्री और पुरुष की स्थिती पर बडे वस्तुगत और सटीक ढंग से फोकस किया है। न सिर्फ अपनी सामाजिक सक्रियता, वरन उपन्यास द्वारा मौजूदा मानव विरोधी माहौल का सशक्त प्रतिरोध को दर्शाया हैं। प्रस्तुत उपन्यास में व्यापक मानविय संवेदना के साथ अभिव्यक्ति हुई है। अंत में कहा जा सकता है कि 'आग-पानी आकाश' उपन्यास में उपेक्षित, वंचित, पीडित, शोषित, दलित समाज को वाणी देता है।

संदर्भ :-

१. आग-पानी आकाश, दिवाकर, रामधारी सिंह-किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली. सं. २०१३ पत्र. ८.
२. वही, पत्र. ६८
३. वही, पत्र. १०६
४. वही, पत्र. १२०
५. वही, पत्र. २१

T.C.
Assistant Professor
Shivaji College, Hingoli.
Tq.& Dist Hingoli (MS.)

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli